पीएच० डी० शोध - प्रारूप

मुण्डारी शिष्ट साहित्य की दशा एवं दिशा : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

मुण्डारी विभाग

रांची विश्वविद्यायल, रांची

पीएच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप

संकाय - जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा

वर्ष – **2024**

शोध निर्देशक :-

डॉ. जुरन सिंह मानकी
सहायक प्राध्यापक, मुण्डारी विभाग
एस. एस. मेमोरियल कॉलेज, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधकर्ता:-

बिनाधर सांडिल
यू. जी. सी. नेट / जे. आर. एफ

मुण्डारी शिष्ट साहित्य की दशा एवं दिशा : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

(प्रस्तावित शोध प्रारूप)

भूमिका :

आदि काल से भारत वर्ष मे विभिन्न जनजातियां निवास करती हैं। इन जनजातियों में मुंडा जनजाति भी प्राचीन काल से भारतवर्ष का वासी है। विद्वानों ने मुंडा जनजाति को प्रोटो-ऑस्ट्रेलॉयड प्रजाति की शाखा के रूप में चिन्हित किया है। यह जनजाति लगभग 600 ई० पूर्व से छोटा नागपुर की धरती में रचती बसती है। छोटा नागपुर अर्थात झारखंड के आलावे मुंडा जनजाति उड़ीसा, बिहार, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़, असम, अंडमान निकोबार दीप समूह आदि राज्यों में भी हैं। भारत के बाहर ये बांग्लादेश, नेपाल, भूटान आदि देशो में भी मुंडा जनजाति निवास करती है। 2011 की जनगणना के अनुसार झारखंड की कुल आबादी 3,29,88,134 है। झारखंड के कुल आबादी में से आदिवासियों की जनसंख्या 86,45,042 है, जो लगभग कुल जनसंख्या का 26.20% है। केवल मुंडा जनजाति की बात करें तो इनकी जनसंख्या 12.29 लाख है, जो राज्य की तीसरी बड़ी जनजाति है। पूरे विश्व में मुंडा जनजाति की जनसंख्या लगभग 25 लाख से भी अधिक है।

मुंडा जनजाति अपनी बोलचाल में मुंडारी भाषा का प्रयोग करती है। मुंडारी भाषा आग्नेय भाषा परिवार का एक सशक्त भाषा है। यह भाषा मुंडा जनजाति के साथ ही प्राचीन काल में पीढ़ी दर पीढ़ी वितरित होती आ रही है।

शुरुआत में मुंडारी भाषा का केवल मौखिक रूप था। कालांतर में मुंडारी भाषा का लिखित रूप भी अस्तित्व में आया। मुंडा जनजाति किसी न किसी रुप से अपनी जीवन यापन संबंधी कार्य, पर्व-त्योहार, संगीत, धर्म एवं संस्कृति संबंधित शिक्षा, वंश दर वंश संजोकर आ रही है। मुंडा जनजाति अपनी रीति-रिवाज, साहित्य, संस्कृति आदि को मौखिक रूप से ज्यादा प्रयोग करते हैं तथा तथा अगली पीढ़ी को स्थांतरित करती है।

परंतु आधुनिकता एवं विकास की आंधी में मुंडाओं की साहित्य, संस्कृति एवं संस्कार धूमिल होती जा रही है। मजबूत संस्कृति एवं साहित्य का प्रभाव भी मुंडाओं के पहचान को खतरे में डाल दी है। सभ्य कहलाने एवं दिखने की होड़ में आदिवासी समाज अपनी संस्कृति, साहित्य, रहन सहन आदि भूलता जा रहा है। शहर की ओर पलायन करता आदिवासी मुंडा समाज पारंपरिक शिक्षा दीक्षा से वंचित होता जा रहा है।

प्रेरणा :-

मेरा जन्म आदिवासी बहुल क्षेत्र में आदिवासी परिवार में हुआ है। मेरी प्राथमिक शिक्षा गांव के ही स्कूल में हुई। मैट्रिक एवं इंटर की परीक्षा घर से दूर छोटे से शहर बुंडू (रांची से 42 किलोमीटर) में पूर्ण करने के बाद भारत के कठिनतम परीक्षाओं में गिने जाने वाले परीक्षा JEE MAINS तथा JEE ADVANCE में पास होकर भारत सरकार द्वारा संचालित प्रतिष्ठित संस्थान (NIT JAMSHEDPUR) से स्नातक की पढ़ाई पूरी की।

चूँकि मेरा गांव पदमश्री डॉ रामदयाल मुंडा के गांव देउरी के करीब है, अतः मैं स्कूल के दिनों से ही पदमश्री डॉ रामदयाल मुंडा के नाम से परिचित था। कई बार मैं उन्हें मंचों पर बांसुरी बजाते देखा था। तब से उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर आदिवासी संस्कृति एवं साहित्य की ओर खींचा चला गया। स्नातकोत्तर के दौरान मेरे सहायक प्राध्यापक डॉ जुरन सिंह मानकी एवं श्रीमती अल्बिना जोजो ने मुण्डारी साहित्य और उसके शोध की जानकारी दी एवं शोध की ओर अग्रसर किया । प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के दौरान मुंडारी की विभिन्न लेखकों जैसे डॉ रामदयाल मुंडा, जगदीश त्रिगुणायत, डॉ मानसिद्ध बड़ायुद, डॉ बीरेंद्र कुमार सोय, आदि की किताबों को पढ़ने का अवसर मिला जो मुझे इस ओर अग्रसित किया। प्रो. श्री मनय मुंडा (HOD Department of Mundari, Ranchi University) ने भी मुझे शोध के लिए प्रेरित किया।

मैं 7th JPSC की पीटी परीक्षा पास कर JPSC MAINS की परीक्षा में भी शामिल हुआ हूं। इस दौरान मुझे एक सब्जेक्ट मुंडारी भी मिला था। परीक्षा के दिन अन्य भाषाओं की तुलना में मुंडारी भाषा साहित्य के केवल लगभग 35 छात्र ही इस परीक्षा में शामिल हुए थे। अत्यंत कम आंकड़ा मुझे मुंडारी साहित्य के दशा एवं दिशा की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करने तथा साथ ही इनका समाधान हेतु हल निकालने को प्रेरित किया।

<u>परिकल्पना</u> :-

एकांत में देश-दुनिया की खबरों से बेखबर अपनी मस्ती में रहने वाली मुंडा जनजातियों की संस्कृति एवं साहित्य को संरक्षित रखना इस विकास की गति में चुनौती बन गई है। देश की विकासशील गति के साथ कदम से कदम

मिलाकर चलने योग्य बनाने तथा इनकी संस्कृति एवं साहित्य को जीवित रखने रखने के लिए मुंडा जनजातियों के साहित्य को दुनिया के सामने दिग्दर्शित करने की परिकल्पना मेरे मन में आया।

<u>शोध का उद्देश्य</u> :-

प्रकृति प्रेमी मुंडा जनजाति की जीवन शैली, आर्थिक क्रियाकलाप, गीत संगीत आदि बहुत ही अनूठी है। इसके साहित्य को समृद्ध बनाकर निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति की जा सकती है-

1. मुंडा जनजाति की गौरवमई ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को उजागर करना।

2. मुंडा जनजाति को पुनः संगठित कर हमारे पूर्वज रिसा मुंडा द्वारा कल्पित सोना लेकन दिशुम (Gold Era) की ओर अग्रसित करना।

3. पठन-पाठन अर्थात ज्ञान वर्धन की ओर मुंडारी साहित्य के द्वारा मुंडाओं की रूचि को बढ़ाना।

4. Competitive Exam की तैयारी को तुलनात्मक आसान बना कर मुंडा जनजाति को इसके भागीदारी बनाना।

<u>शोध का समाज में प्रभाव</u> : -

प्रस्तुत शोध को पूरा करने तथा प्रकाशित होने से समाज पर इसका निम्न प्रभाव पड़ेगा :

1. " मुण्डारी शिष्ट साहित्य की दशा एवं दिशा: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" के प्रकाशित होने से समस्त मुण्डारी भाषा-भाषियों में साहित्य के प्रति सम्मान और जागृति की लहर आयेगी।

2. मुण्डारी भाषा-साहित्य को अध्ययन करने की रूचि बढ़ेगी।

3. मुण्डारी भाषा-साहित्य को लिखने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरणा मिलेगी।

4. रचनाओं का पाठक तक पहुँचने के कारण इसकी गुण गरिमा एवं साहित्य लेखन में रूचि बढ़ेगा।

5. इस अनुसंधान से मुंडाओं की अनूठी परंपरा, भाषा साहित्य, गीत-संगीत तथा मुंडा जनजाति की जीवन पद्धति आदिवासियों के अलावा गैर आदिवासियों तक पहुंचेगी।

<u>शोध प्रविधि :-</u>

प्रस्तावित शोध प्रबंध को पूर्ण करने हेतु निम्नलिखित शोध विधियों को अपनाया जाएगा-

1. सर्वेक्षण पद्धति
2. तुलनात्मक
3. विश्लेषणात्मक
4. अवलोकन
5. साक्षात्कार

शोध का विषय - मुण्डारी शिष्ट साहित्य की दशा एवं दिशा : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध कार्य की उपादेयता एवं प्रेरणा

प्रस्तुत शोध कार्य की विषय व्याप्ति

प्रस्तुत शोध कार्य की शोध विधि

संबंधित पूर्व शोध कार्यों की समीक्षा

प्रथम अध्याय :- मुण्डारी साहित्य का सामान्य परिचय

क. मुंडारी भाषा एवं साहित्य का सामान्य परिचय

ख. मुण्डारी साहित्य का ऐतिहासिक दृष्टिकोण

ग. मुंडारी वाचिक साहित्य का क्रमगत विकास

घ. मुंडारी साहित्य का काल विभाजन

द्वितीय अध्याय :- मुण्डारी साहित्य के विभिन्न रूप

क. पद्य साहित्य

- गीत
- कविता

ख. गद्य साहित्य

- व्याकरण
- कहानी
- उपन्यास
- शब्दकोश
- नाटक

तीसरा अध्याय :- मुण्डारी साहित्य के प्रमुख आयाम

क. मुंडारी साहित्य में सांस्कृतिक चित्रण

ख. मुंडारी साहित्य में सामाजिक चित्रण

ग. मुंडारी साहित्य में प्राकृतिक चित्रण

घ. मुंडारी साहित्य में प्रेम चित्रण

ङ. मुंडारी साहित्य में नारी चित्रण

च. मुंडारी साहित्य में समसामयिक चित्रण

चौथा अध्याय :- मुंडारी साहित्य एवं संचार माध्यम

क. पत्र पत्रिकाएं

ख. रेडियो एवं दूरदर्शन

ग. सिनेमा

घ. अखबार

ङ. अन्य साधन

पांचवा अध्यायः- मुंडारी साहित्य का अन्य साहित्य से संबंध

क. मुंडारी साहित्य का हिंदी साहित्य से संबंध

ख. मुंडारी साहित्य का अंग्रेजी साहित्य से संबंध

ग. मुंडारी साहित्य का पंचपरगनिया एवं बांग्ला साहित्य से संबंध

घ. मुंडारी साहित्य का नागपुरी साहित्य से संबंध

ङ. मुंडारी साहित्य का खड़िया साहित्य से संबंध

च. मुंडारी साहित्य का अन्य भाषा साहित्य से संबंध

छठवां अध्याय :- मुंडारी साहित्य में लिपि

क. देवनागरी लिपि में मुंडारी साहित्य एवं उनकी चुनौती

ख. रोमन लिपि में मुंडारी साहित्य एवं उनकी चुनौती

ग. मुंडारी बानी एवं अन्य लिपि में मुंडारी साहित्य एवं उनकी चुनौती

सातवां अध्यायः- आज की मुंडारी साहित्य एवं मानकीकरण

क. वर्त्तमान परिपेक्ष्य में मुंडारी साहित्य एवं उनकी चुनौती

ख. मुडारी साहित्य में मानकीकरण की चुनौती

<u>सारांश और निष्कर्ष</u>

<u>परिशिष्ट</u>

1. आधार ग्रंथ की सूची

2. सहायक ग्रंथ की सूची

3. पत्र - पत्रिकाओं की सूची

4. साक्षात्कार सूची

5. चित्रावली

नोट - शोध प्रारूप में आवश्यकतानुसार आंशिक परिवर्तन किए जा सकते हैं

शोध निर्देशक :- **शोधकर्ताः-**

डॉ. जुरन सिंह मानकी **बिनाधर सांडिल**

सहायक प्राध्यापक, मुण्डारी विभाग यू. जी. सी. नेट / जे. आर. एफ.

एस. एस. मेमोरियल कॉलेज, राँची

राँची विश्वविद्यालय, राँची

आधार ग्रंथों की सूची

1. खान, डॉ एम फिरोज खान, नियाज शगुफ्ता, आदिवासी साहित्य दशा एवं दिशा, अनुसन्धान पब्लिशर्स, 2021

2. खलखो, शांति, उरावं संस्कृति परिवर्तन एवं दिशा, कुडुख विकास समिति, रांची

3. गुप्ता, रमणिका, आदिवासी साहित्य यात्रा, नेहा पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2018

4. बड़यऊद, डॉ मानसिद्ध, होडो जगर सहिति ओड़ोः सहिति ओलहरिया को, कैथोलिक प्रेस रांची, 2018

5. मुंडा, अंशुमाला, आदिवासियों की भाषाएं एवं उनकी संस्कृति, जय भारती प्रकाशन भट्टी गंज, इलाहाबाद

6. मुंडा, सुभाष चंद्र, पांच परगना के मुंडा पर हिंदू धर्म का प्रभाव, सुड़ा संगेन, कॉलेज रोड बंडू (किताब प्राप्ति स्थान)

7. मानकी, डॉ. जुरन सिंह, मुंडा साहित्य में संस्कार : एक अध्ययन

8. सुथार, मनीष, हिंदी कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श दशा और दिशा, वनया पब्लिकेशन कानपुर, 2022

9. सोय, डॉ बीरेंद्र कुमार, मुंडारी जगर ओड़ोः सहिति रेआ उबर, प्रगति प्रकाशन नई दिल्ली, 2019

10. हेमरोम, डॉ खातिर, कंडुलना डॉ जोन, मुंडा आदिवासी जीवन दर्शन, एजुकेशनल बुक, सर्विस, 2022

11. होरो, अमरदीप, मुंडा आदिवासियों का समाज संस्कृति और इतिहास, कैथोलिक प्रेस रांची

12. श्रीधर, प्रो. प्रदीप, प्रवासी हिंदी साहित्य दशा एवं दिशा, तक्षशिला प्रकाशन, 2018

सहायक ग्रंथों की सूची

1. ओड़ेया, मेनस, मतुराअ: कहनि भाग (1-5), कैथोलिक प्रेस रांची

2. उपाध्याय, कृष्णा देव, लोक साहित्य की भूमिका, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2019

3. कंडुलना, जोसफ, छोटानागपुर के आदिवासी, डीओकेसन पोस्टराल सेंटर, तोरपा रोड खूंटी, 1994

4. चतुर्वेदी, डॉ ए. के., अग्रवाल रिंकी, झारखंड का इतिहास, SBPD पब्लिकेशन

5. तिर्की, डॉ सिकरादास, मुंडारी लोक साहित्य में ऐतिहासिक तथ्य, पृथ्वी प्रकाशन नई दिल्ली

6. देवी, महाश्वेता, जंगल के दावेदार, राधाकृष्णन प्रकाशन, 2008

7. देवी, महाश्वेता, चोट्टि मुंडा और उसका तीर, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2018

8. पातर, राधा गोविंद, जानिए भारत के मुंडाओं को, प्रभात पेपर बैग्स, 2021

9. मुंडा, डॉ रामदयाल & रतन सिंह मानकी, आदि धर्म, झारखंड प्रकाशन रांची, 2009

10. मुंडा, डॉ रामदयाल, आदिवासी अस्तित्व और झारखंडी अस्मिता के सवाल, दयानंद मार्ग दरियागंज नई दिल्ली

11. मुण्डा, डॉ० रामदयाल, सेलेद, रुम्बुल, दिरि ओड़ो, हृतमा, राँची, 2005

12. मुण्डा, डॉ॰ रामदयाल, हिसिर, रुम्बुल, दिरि ओड़ो, हतमा, राँची, 1972

13. मुण्डा, डॉ॰ रामदयाल, ए'आ नावा कानिको, सरस्वती प्रेस, उदयपुर, राजस्थान, 1980

14. मुंडा, विशेश्वर, मिश्रा, शकुंतला मुण्डारी भाषा साहित्य, झारखण्ड झरोखा, रांची

15. रॉय, शरत चंद्र, मुंडाज एंड डेयर कंट्री, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, 1912

16. हॉफमैन, फादर जॉन, इनसाइक्लोपीडिया मुंडारिका भाग- (1-16), पब्लिशिंग हाउस

17. हस्सा, तेज कुमार, मुण्डारी भाषा शिक्षण एवं साहित्य, शिवांगन पब्लिकेशन, शिव भवन, रातु रोड, रांची

<u>पत्र - पत्रिकाओं की सूची :-</u>

पत्रिका का नाम	**प्रकाशक/प्रकाशन**
1. एयोन	राँची
2. बिहान पत्रिका	बुण्डू
3. सरना सकम	भइयाराम मुण्डा
4. संगोम	डॉ० विरेन्द्र कुमार सोय
5. डहर	छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ
6. जवा डालि	त्रिमासिक पत्रिका, राँची
7. सेंड़ा सेतेङ	नवीन मुण्डू
8. मरसल	निरल एनेम होरो